अग्निहोत्र

लेखक : प्रो. (डॉ.) शैलेंद्र शर्मा

2023
अग्निहोत्र

लेखक
डॉ. शैलेंद्र शर्मा

सीआरडीईईपी प्रकाशन
अनिहोत्र

लेखक या प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस पुस्तक का कोई भी भाग पुनर्प्रकाशित, पुनः प्रकाशित या पुनःप्रिंट नहीं किया जा सकता है।

कॉपीराइट © सीआरडीईईची प्रकाशन

प्रथम संस्करण: 2023

978-81-957522-7-0

टाइपसेटिंग और स्टिंग: सीआरडीईईची प्रकाशन, देहरादून
अगिन्होत्र

वेदोच प्राण ऊर्जा (Bio-energy) विज्ञान से संबंधित अगिन्होत्र की कृति, प्रकृति की एक लय पर आधारित है। अगिन्होत्र का नियमित आचरण पर्यावरण प्रदूषण से रक्षा करता है। अगिन्होत्र प्रदूषण जनित रोगों एवं तनाव से आचरणकर्ता को मुक्त रखता है। जो शान्ति और सीम्यता अनेक ग्रन्थों के पढ़ने या अनेक प्रवचनों के सुनने से नहीं मिलती, वही अत्यंत अल्प समय में अगिन्होत्र के आचरण से मिलती है।

चौबीस घाटे में उदय और अस्त की क्रिया एक-एक बार होने से प्रकृति में जो परिवर्तन होता है, उस क्षण को प्रकृति का ‘ताल‘ कहते हैं। सूर्योदय और सूर्यास्त प्रकृति का सबसे छोटा ताल-चक्र है। अन्य तालचक्र प्रति साल (समाह), पन्त्रह (पक्ष), तीस (मास), साठ (ऋतु), एक सौ अस्ती (अयन) तथा दीन सो साठ दिन (वर्ष) के अन्तर से होते हैं। इनके नाम कोष्ठक में हैं ‘एस्ट्रोफिजिक्स’ में सूर्योदय सूर्यास्त के सबसे छोटे तालचक्र को सिरकेडियन रिदम (Circadian Rhythm) तथा शेर बड़े तालचक्रों को इनफ्राडियम रिदम (Infradian Rhythm) कहते हैं। ये समय संधिया ऐसी होती हैं, कि जब पृथ्वी के वायुमण्डल में अकस्मात परिवर्तन होकर उसका अच्छा या बुरा आघात पृथ्वी की सजीव सृष्टि पर होता है। वनस्पति, प्राणी तथा मन पर इन परिवर्तनों की प्रतिघातन तुरन्त उत्पन्न होती है।

यह है सूर्योदय और सूर्यास्त के समय का सृष्टि रहस्य। अगिन्होत्र इस तालचक्र पर आधारित होने से इसके समय में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। इसीलिए समय की पावनदी अगिन्होत्र विधि की पहली महत्वपूर्ण शाखा है। इसमें कोई छूट नहीं। फिर भी कोई खास कारण से छूट जाय तो कोई समस्या नहीं। अगली बार के अगिन्होत्र का क्रम निरंतर रखें।
सृष्टि की उत्पत्ति के साथ आरम्भ अभिन उपासना में प्रयुक्त अनिपत्र की ही उल्टी प्रतिकृति के रूप में पिरामिड बनाए गए, यही विचार संगत लगता है। इस बात का सबूत ‘पिरामिड’ यह शब्द ही है। ग्रीक भाषा के (अर्थात अभिन) और अंग्रेजी के (अर्थात बीच में) शब्दों से पिरामिड शब्द बना है, जिसका अर्थ है “वह आकार जिसके बीच में अभिन हैं”।

Introduction Agnihotra

वैज्ञानिकों के अनुसार पिरामिड-ऊर्जा, सौर ऊर्जा से कई गुना अधिक क्रांतिकारी सिद्ध होगी।

अनिपात्र सामान्यतः तांबे का ही हो तो अच्छा है। आप जानते हैं कि इस धातु का उत्तम विद्युत वाहक के रूप में प्रयोग किया जाता है। चेकोस्लोवाकिया के एक परमाणु विशेषज्ञ के अनुसार सभी धातुओं के मूल अणुओं के विभिन्न आकार होते हैं। ताम्बा धातु के मूलाणु का आकार हूबहू अनिपात्र जैसा ही है यह खोज भी साबित करती है, कि तांबा धातु अनिपात्र के लिए निर्माण हुई है।

इस अनिपात्र का आकार विशिष्ट नाप में बना है। इसकी लम्बाई 10 अंगुल एवं ऊंचाई 7 अंगुल है। पात्र का आकार ऊपर 14.5×14.5 सेमी., तला 5.25×5.25 सेमी तथा ऊंचाई 6.5 सेमी है। ऊंचाई की तरफ समपरिमाण में तीन सोपान हैं। प्रत्येक सोपान की तरफ ऊंचे होते अनिपात्र की लम्बाई एवं चौड़ाई बढ़ती गई है। वेदों में अभिनोत्र से लेकर अध्यादेश तक अनेक यज्ञ बनाए गये हैं।

सभी चिकित्सा पद्धतियाँ गाय के गोबर के औषधि गुणों का समर्थन करती हैं। विश्व के सभी देशों की प्राचीन चिकित्सा पद्धतियों में रोग निवारण के लिये गाय के गोबर का प्रयोग किया जाता था। गाय के गोबर में मेंथाल, अमोनिया, फिनोल, इप्परियल तथा नाइट्रोजन (0.32%) फास्फोरिक एसिड (0.21%) एवं पोटाष (0.16%) पाया जाता है।
इटली के वैज्ञानिक डॉ. बिगेड की खोज है, कि गाय के ताजे गोबर की गन्ध मात्र से बुखार एवं मलरिया के रोगाणु नष्ट हो जाते हैं। ‘न्यूयॉर्क टाइम्स’ के अनुसार “पोषक आहार पर पतली गाय के गोबर जैसी कीटाणु नाशक शक्ति अनुसार”। गाय के गोबर से लिपी-पुली वस्तुओं एवं घर की दीवारें अणु विस्फोट के यात्र को रोकथाम करती है तथा अंतरिक्ष में उत्पन होने वाली भीषण गर्मी को गाय का गोबर कम करता है, यह रशियन वैज्ञानिकों की खोज है।

पूना के फर्म्यूजन कालेज के जीवाणु शास्त्रीयों ने एक प्रयोग में पाया है कि नित्य अभिहोत्र की एक समय की आहुतियों में 36×32×10 फुट के हाल की 8000 घनफुट वायु में कृत्रिम रूप से निर्मित वायु प्रदूषण खत्म हुआ। इस प्रयोग से यह सिद्ध हुआ कि एक समय के अभिहोत्र से ही 8000 घनफुट वायु का 77.5% हिस्सा शुद्ध एवं पुष्टि कारक गैसों से युक्त होता है। इस प्रयोग से यह भी पाया गया कि एक समय के अभिहोत्र से ही 90% हानिकारक कीटाणु नष्ट होते हैं।

गोघृत का वर्णन बेदों में ‘आयुवेण्सितम्’ के रूप में किया है। यानि गोघृत ही जीवन है। ‘औषधियों की ओषधि’ के रूप में प्राचीन चिकित्सक इसका वर्णन करते हैं। गाय का यह इस भूतल पर बेजोड़ पदार्थ है। गोघृत में किन-किन तत्वों का समावेश है यह अभी स्पष्ट नहीं हुआ है, किन्तु अन्याय इसमें 11 एसिड, 12 धातुएं, 2 लेक्टोज और 4 गैसे होती है।

गाय के धी को चावलों में मिश्रित करके मन्नोच्चारणपूर्वक जब अभिहोत्र में आहुति दी जाती है, तब इस आहुति के जलने से उत्पन्न चार गैसे अभी तक पहचानी जा चुकी है। (1) एथिलिन आक्साइड (2) प्राप्तिली आक्साइड (3) फार्मिल डिहाइड तथा (4) बीटा प्राप्तियों लेक्टोन। आहुति देने के
पश्चात् गोघृत से एसिटिलीन निर्माण होता है। यह एसिटिलीन प्रकार उष्णता की ऊर्जा है जो दृष्टि वायु को अपनी ओर खींचकर उसे शुद्ध करती है। गोघृत से उत्पन्न इन गैसों में कई रोगों को तथा मन के तनावों को दूर करने की अनुरुत क्षमता है।

नित्य अनिहोत्र से घर के वातावरण में सर्वदा शुद्धि एवं पुष्टिकारक प्राणवायु की उपलब्धि होती है। यह केवल गोघृत की आरोग्यदायित्व शक्ति का प्रभाव है।

सदैव ध्यान रहे कि गाय के धी के बिना अनिहोत्र नहीं हो सकता।

गाय का धी अत्यावश्यक है।

मन्त्र रूपी वर्णमाला, शब्द अथवा शब्द समूह क्रष्म-मुनियों ने अपने तपाचरण द्वारा सिद्ध कर रखे हैं। इसीलिए उन शब्दों में शक्ति है। यदि तिलक के वाक्य की शक्ति का हम अनुभव ले सकते हैं तो क्रष्म-मुनियों द्वारा सिद्ध शब्दों की शक्ति क्यों न मानी जाए?

परन्तु शब्द दो प्रकार के होते हैं। नित्य शब्द तथा कार्य शब्द। जो शब्द नित्य होते हैं अथवा जिससे निर्माण होने वाले कम्पन नित्य स्वरूप के होते हैं उन्हें नित्य शब्द कहते हैं। और जो शब्द कार्य सिद्ध होते ही लुप्त होते हैं अथवा जिसने निर्माण होने वाले कम्पन अनित्य स्वरूप के होते हैं उन्हें कार्य शब्द कहते हैं।

कार्य शब्द का उदाहरण लोकमान्य तिलक के उपरोक्त शब्द है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इन शब्दों में वह चैतन्य न रहा, जो स्वतंत्रता प्राप्त होने के पूर्व था। वहाँ वेदों के शब्द नित्य होने से हजारों वर्ष पहले इनमें जो शक्ति होती थी वही आज भी है और रहेगी। ऐसे नित्य तथा सामान्यवान शब्दों को ही मन्त्र कहते हैं।

अनिहोत्र के मन्त्रों में आएं ‘अमि’ ‘सूर्य’ ‘प्रजापति’ ये शब्द ईश्वरवाचक हैं और एकमात्र ईश्वर शक्ति के ही विविध तेजगुणों का बखान कर रहे हैं। इन मन्त्रों का अर्थ है- ‘मैं अमि, सूर्य या प्रजापति को आहूति अर्पण कर रहा हूं। वह अब अमि, सूर्य या प्रजापति की हुई, वह अब मेरी नहीं रही।’ यद्यपि
इन तीन शब्दों का अर्थ एक ही है परन्तु इनसे उत्पन्न ध्वनिकम्पनों के शरीर मन तथा प्राण पर होने वाले प्रभाव भिन्न हैं।
अग्निहोत्र से कृषि

कृषि भूमि की उर्वराशक्ति प्रदूषण एवं रासायनिक खादों एवं कीटनाशक दवाइयों के कारण खत्म हो गई। स्वस्थ फसल का रहस्य स्वस्थ वातावरण में छुपा है। अग्निहोत्र से उत्पन्न पोषक तत्व वायु, जल, भूमि एवं सूर्य प्रकाश सभी में प्रविष्ट होते हैं और प्रदूषण से उत्पन्न जहरीले प्रभाव को नष्ट करते हैं।

मनुष्य जाति प्रतिवर्ष 375 अरब टन खाद्य सामग्री खा जाती है इसका बड़ा भाग सीधे प्राप्त होता है वनस्पतियों से, जो सूर्य की रोशनी की मदद से हवा और धरती में से उसका निर्माण करती है। शेष भोजन पशुओं से आता है, जो अन्ततः वनस्पतियां खाकर ही जीते हैं।

सूर्य की रोशनी, हवा, धरती और पानी से पोषक तत्व ग्रहण कर ये वनस्पतियां हमारा खाद्य निर्माण करती हैं। परन्तु प्रदूषण के कारण उपरोक्त चारों तत्व सत्यवीण हो चुके हैं। आज वनस्पतियां इनसे पोषक तत्व नहीं पा रही हैं। आज इसीलिए समस्या अधिक अनोप्तादन तक सीमित नहीं रही बल्कि यह भी अहसास किया जाने लगा है कि जो अनोप्तादन हो वह पोषक तत्वों से पूर्ण, सत्यवीण एवं शुद्ध हो।

हमारे देश में समय पर वर्षा होना समस्या का विषय है। बल्कि अवर्षा या अतिवर्षा के कारण फसलें चौपट होने के प्रारम्भ बढ़ते जा रहे हैं। प्रलयकारी बाढ़ आती है या फिर सूखा पड़ता है। प्रकृति का वर्षा चक्र अनिश्चित असंतुलित हो गया है। यदि समय पर वर्षा हुई तो वह पोषक तत्वों से पूर्ण होगी ही यह नहीं कहा जा सकता। उदाहरणार्थ कुछ स्थानों पर तेजाबी तत्वों से युक्त वर्षा हुई है। जो फसल के साथ-साथ सारी जीव सृष्टि के लिए हानिकारक है।

नदी, नहरें, तालाब एवं कुएं हमारी कृषि के लिए सिंचाई के साधन हैं। परन्तु इनसे सिंचाई के लिए पाप्त जल भी प्रदूषित हो गया है या होता जा रहा है। क्लोराइड्स पेस्टिसाइड्स तथा अन्य जहरीली दवायें इनके पानी में भारी मात्रा में
मिलती हैं जिससे ये विशाल जल भण्डार निर्जीव होता जा रहा है। इस पानी की फसल के लिए उपयोगिता नहीं रहती।

वर्षा की अनिश्चितता, पृथ्वी के जल संसाधनों से प्राप्त पानी की निसत्ताना का कारण ढूंढने पर सम्म व्यापी प्रदूषण ही गुनहगार साबित होता है। मानव निर्मित प्रदूषण के अत्याचार का जवाब प्रकृति अपने भीषण प्रकोपों से दे रही है। सूर्य प्रकाश से पौधों के मिलने वाला जीवन प्रदूषण के कारण विकृत हो गया है। जंगल कटाई तथा सागर, नदी व तालाबों में फेंकी जाने वाली गन्धर्घी या कूड़े कचरे के कारण पौधों की कार्बनडाइआक्साइड ग्रहण एवं विपुल मात्रा में आक्सीजन के उत्तरजन की प्राकृतिक क्रिया मनद हो रही है।

विज्ञान ने रासायनिक खादों का आविष्कार किया। अन्न की बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिए मनुष्य इन रासायनिक खादों का अन्धाधुन इस्तेमाल कर रहा है। इन खादों के प्रयोग से कृषि भूमि की गमति के गुण, सीधिता, भुरभुरा होना, चिकनाइ तथा जल धारण करने की क्षमता खत्म हुई। अनाज उत्पादन में सहायक जीव-जीवाणु व खनिज नष्ट हुए। रासायनिक खादों एवं कीटनाशक दवाइयों के छिड़काव के दुष्परिणाम अनाज पर पाये गये। हाल ही में इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस (बायो-कैमिस्ट्री विभाग) मुंबई के वैज्ञानिकों द्वारा स्थानीय फलों एवं सब्जियों की कोभिय पर विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा निश्चित मात्रा से कहीं अधिक मात्रा में सब्जियों एवं फलों में कीटनाशी जहरीली दवाओं के अंश पाए गए। हमारे नित्य के भोजन में 0.27 मिग्राम हिस्सा डी.डी.टी. का रहता है।

कृषि भूमि की उर्वराशक्ति प्रदूषण एवं रासायनिक खादों एवं कीटनाशक दवाइयों के कारण खत्म हो गई। स्वस्थ फसल का रहस्य, स्वस्थ वातावरण में लूपा है। अनिश्चित्र में उपचन पोषक तत्व वायु, जल, भूमि एवं सूर्य प्रकाश सभी में प्रविष्ट होते हैं और प्रदूषण से उत्पन्न जहरीले प्रभाव को नष्ट करते है। जमीन की उर्वराशक्ति बढ़ती है। जल धारण करने की भूमि क्षमता अधिक बढ़ती है। वातावरण पोषक द्रव्यों से युक्त बना रहता है। पौधों के चयापचय
पर अमिहोत्र का वातावरण उत्प्रेरक का कार्य करता है, जिससे पौधे स्वस्थ एवं रोग प्रतिकारक्षम बनते हैं। इन सब परिणामों को देखने के लिए खेतों के मध्यभाग में नित्य अमिहोत्र किया जाता है। इस प्रयोग के दौरान कभी भी रासायनिक खाद एवं कीटनाशक दवाओं का उपयोग नहीं करना है। पढ़ने में विचित्र लगेगा किंतु अनुभव से प्रमाणित सत्य है कि अमिहोत्र से कृषि करने पर कई गुण उत्पादन सम्भव है। अनाज का रंग, रूप एवं स्वाद कृतिम खादों से उत्पन्न अनाज से कई गुण अच्छा रहता है। जमीन की उर्वरता बढ़ती है। एवं साथ-साथ महंगी खादों एवं दवाइयों से गरीब किसान को सदा के लिए छुटकारा मिलता है।

इसका छोटे पैमाने पर प्रयोग आप भी कर सकते हैं। अपने बगीचे, गृह वाटकों में नित्य अमिहोत्र की ठंडी राख निदाई, गुड़ाई, रोपाई एवं सिंचाई करते समय अमिहोत्र मंत्रों का उच्चारण करते हुए डालें। इस प्रयोग के दौरान रासायनिक खाद एवं दवाएं डालना भूल जाएं। कुछ ही दिनों में आश्रयजनक परिणाम आप खुद देख सकेंगे। फल एवं सब्जियों आपके पहले से अधिक पुष्प, पूर्ण विकसित एवं स्वादिष्ट मिलेंगी। पौधे स्वस्थ एवं रोगमुक्त रहेंगे।

हरित क्रांति के स्वपन को साकार करने में संलग्न भारतीय वनस्पति विज्ञानियों के लिए अमिहोत्र कृषि पद्धति उनकी समस्याओं का हल प्रस्तुत करती है। आर्थिक स्तर पर दुर्बल छोटे कृषकों को महंगी खादों एवं दवाइयों से छुटकारा दिलाकर पैदावार के तथा गुणवत्ता के उच्चांक प्रस्तुत करने वाली अमिहोत्र कृषि पद्धति एक वरदान है। यह अब तक के अनुभवों के आधार पर निक्षिप्त रूप से कहा जा सकता है।
अनिहोत्र के वैज्ञानिक प्रयोग/प्रमाण Change Title

अनिहोत्र एक विशेष अभि प्रक्रिया है जिसका प्रदर्शन ढील सूर्योदय एवं सूर्यस्त के समय तांबे के पिरामिड में किया जाता है। ये प्राचीन वैदिक ज्ञान से लिया गया है। अनिहोत्र को पर्यावरण की शुद्धता का अच्छा साधन माना गया है, विशेषकर जल प्रदूषण को कम करने में यह असरदार है। वर्तमान अध्ययन यह दर्शाएगा कि पानी शुद्ध हो जाएगा यदि हम पानी को उस कमरे में रख दे जहाँ लगातार अनिहोत्र की प्रक्रिया चल रही है। एक और तरीके से पानी को शुद्ध किया जा सकता है यदि पानी की बॉटल को ‘फाराडे केज’ के अंदर रख कर अनिहोत्र कमरे में रख दें जाए। ये परिणाम यह सूझाते हैं कि अनिहोत्र ‘विद्रुत चुम्बकीय क्षेत्र’ के लिए एक ऊर्जा क्षेत्र पैदा करता है जिसका गहरा असर होता है।

पीने योग्य पेयजल की उपलब्धता तेजी से एक विश्वव्यापी समस्या बनती जा रही है। पृथ्वी से आने वाले औद्योगिक विकिरण मानव गतिविधियों की संख्या को देखते हुए वातावरण प्रदूषण के चलते कृषि के लिए पानी की उपलब्धता पर असर पड़ा है। इसके साथ ‘एसिड रेन’ इस स्थिति को और बिगाड़ देती है। अतः कम खरीदली, आसान विधि जो पानी को शुद्ध कर सके अति आवश्यक हो चुकी है। कुछ रिपोर्ट्स सूझाते हैं, कि अनिहोत्र की प्राचीन विधि सस्ता उपाय है।

प्रारंभिक परीक्षण में ये देखा गया कि अनिहोत्र राख प्रदूषित पानी में मिलाया गया है पानी शुद्ध हो गया (Mondkar, Gerlecka & Matlandar) आगे Matlandar ने दर्शाया कि यदि हम अनिहोत्र राख को प्रदूषित पानी में न डाले सिर्फ पानी को अनिहोत्र कमरे में रख दे तो ये पाया गया की रोजगनक बेक्टीरिया की भारी कमी आई है। शार्मा एक कदम और आगे गए उन्होंने अनिहोत्र राख नहीं मिलाए पर उन बॉटल्स को अभिशाला (ऐसा कमरा जहाँ
अमिहोत्र लगातार प्रदर्शित हो रहा हो) के पास रख दिया। यह महसूस किया गया की पानी शुद्ध हो गया परंतु चूंकि बॉटल्स खुली थी धूएँ के कणों का रासायनिक प्रभाव को बाहर नहीं निकाला जा सकता।

शार्मा ने यह भी दर्शाया की अमिहोत्र वातावरण न केवल स्थानीय जल को शुद्ध करता है परंतु ये पूरी नदी और उसके आस-पास के पानी को भी शुद्ध करता है।

आज के प्रयोग का मुख्य उद्देश्य यह है, कि क्या अमिहोत्र धुआँ बिना किसी प्रभाव के पानी को शुद्ध करने में समस्या है?

फ़िल्टर परीक्षण यह दर्शाता है, कि पाँच दिनों के बाद ‘Coliform’ बेरिया की 50% से अधिक कम हुई लेब मे रखे पानी की तुलना में।

यदि अमिहोत्र से किसी भी प्रकार की राख और धुएँ की रासायनिक क्रिया को बाहर कर दिया जाए तो जो प्रभाव रहेगा वह बस Physics के मामले में होगा।

यह बात एक अनुमान कि अगर लेब मे रखे पानी का तुलना के आधार पर यह कौन सा प्रकार की ऊर्जा क्षेत्र है?

रोजमर्रा की जिंदगी में सबसे सामान्य ऊर्जा क्षेत्र जो है वह है विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र। तो क्या यह विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र ही है जो पानी पर अमिहोत्र के प्रभाव की ओर है?

यह बात पता करने के लिए की कहीं विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र ही जिम्मेदार है अमिहोत्र की क्रिया के लिए निम्नलिखित व्यवस्थित अध्ययन बनाया गया।

इसे Faraday Cage Shield Dechom Wave कहा जाता है। इसलिए यदि अमिहोत्र का प्रभाव विद्युत चुम्बकीय Wave के आधार पर होता है तो पानी की गुणवत्ता में कोई खास प्रभाव नहीं आएगा क्योंकि वह Faraday Cage में है। इस परीक्षण किया गया।

बॉटल्स को होमा थेरेपी गोशाला, महेश्वर (म.प्र.) ले जाया गया। इनमें से तीन-तीन बॉटलों को क्रमशः स्टेनलेस स्टील, ताम्बा एवं एल्यूमिनियम के कंटेनर में रखा गया। इस बात का ध्यान रखा गया की बॉटल और कंटेनर प्रत्यक्ष
रूप से एक दूसरे ना मिले। मेटल कंटेनर प्रत्यक्ष रूप से एक दूसरे का टुकड़ा रखा गया जिसकी साइड से दूरी 1 cm रखी गई। फिर इस मेटल कंटेनर को टाइट बंद कर दिया गया फराडे केज की तरह।

एक तुलना के लिए इन सभी 9 बॉटलों को जो कंटेनर में रखा गया साथ ही उन 8 बॉटलों को भी जो कंटेनर में रखा गया साथ ही उन 8 बॉटलों को भी जो कंटेनर में नहीं रखी थी।

इन सभी बॉटलों को अनिहोत्र कुटिया जों कि होमा थेरेपी गोशाला, महेश्वर में स्थित है रखा गया जहाँ लगातार अनिहोत्र की सूर्योदय और सूर्यस्त के समय प्रक्रिया चल रही थी। वहाँ कोई 8 दूसरी क्रिया नहीं हो रही थी और ना ही दूसरे शब्द बोले जा रहे थे सिवाए अनिहोत्र मंत्रों के।

अनिहोत्र कुटिया का तापमान और लेब का तापमान दोनों में बहुत कम अन्तर था। पांच दिनों के बाद सारे ‘सेम्पल’ बाहर निकाले गए। लेब में परीक्षण के लिए। इन ‘सेम्पल्स’ का परीक्षण बहुत जरूरी था उनके भौतिक रासायनिक मापदंडों पर जैसे कि DO (Dissolved Oxygen), pH, Chemical Origin Demand (COD) hardness और colifom बैक्टीरिया की गणना।

भौतिक-रासायनिक मापदंडों को ज्ञात करने के लिए एक मानक विधि का उपयोग किया जाता है जिसे APHA और Welch कहते है।

मापदंड जैसे की - तापमान, pH, DO ये सारे क्षेत्र पर ही ज्ञात किए गए दुसरे मापदंड जैसे COD, क्लोराइड, Phosphate, Nitrate, Alkalinity, Free CO2 और सारा ठोस का ज्ञात लेब में किया गया। परीक्षक पक्षपात को रोकने के लिए ‘Blind single protocol’ से किया गया परीक्षण के पहले ही बॉटल्स पर नं. अंकित कर दिए गए थे।

परिणामा
प्रयोग तीन प्रतिकृति में किया गया। सारे प्रयोग में पानी की गुणवत्ता में सुधार आया। लेब की तुलना में पॉचो मापदंड के परीक्षण के बाद तालिका तैयार की गई। तालिका 1 में विस्तृत जानकारी दी गई और तालिका 2 में तुलनात्मक विश्लेषण किया गया।

पानी की गुणवत्ता के सारे मापदंड में सामान्य सा सुधार था। 'Control' की तुलना में और यह बदलाव तीनों प्रतिकृति में भी दिखाई दिया। हालांकि कुछ अंतर पाया गया मेटल कठोर में रखे पानी में और बॉटल के पानी में DO, pH, COD को लेकर यह अंतर काफी कम था लेब की तुलना में। अलग मेटल कठोर में भी अंतर आया पर फिर से वो लेब की तुलना में बहुत कम था। तीनो प्रतिकृति के सारे मापदंड के आधार पर पानी की गुणवत्ता के मुख्य परिणाम:

1. अनिहोत्र वातावरण पानी की शुद्धता में मदद।
2. शुद्धता का प्रभाव रहेगा चाहें 'सेम्पल' ‘फराडेज’ में रखा हो या नहीं।

अंत में निष्कर्ष यह निकली कि कुछ एक प्रकार की ऊर्जा क्षेत्र है जो अनिहोत्र के चारों ओर है जो विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र नहीं और जो ‘फराडेज’ से शील्ड’ नहीं है।

विस्तृत विचार

सबसे बड़ा बदलाव था तीनों मेटल कठोर में DO जो पानी ‘स्टेनलेस स्टील’ में रखा स्पष्ट प्रभाव देखा गया और एल्युमिनियम कठोर में सबसे कम प्रभाव देखा गया। कुछ अंतर और देखा गया जो ‘सेम्पल’ बॉटल में थे और जो ‘सेम्पल’ कठोर में थे उनके कठोर ‘फराडेज’ का काम कर रहे थे। जो ‘सेम्पल’ ‘फराडेज’ में थे उनमें कम सुधार था। इसका एक संभव स्पष्टीकरण तापमान के संबंध में हो सकता है। DO पर असर प्रचलित तापमान के कारण हो सकता है।
अनिहोत्र कुटिया का तापमान अनिहोत्र के पहले। बाद में मापा जाता है। सामान्यतः तापमान अनिहोत्र के बाद 1°C बढ़ जाता है और पहली वाली तापमान में आ जाता है 20 या 30 मिनट में। इस तरह का छोटा सा बदलाव को नकारा जा सकता है चूकि ये छोटे से समय के लिए ही रहता है। यह भी संभव है कि मेटल कंटेनर IR Radiation को अनिहोत्र से अवशोषित कर ले और उस ऊर्जा को लम्बे समय के लिए संग्रहीत कर ले।

मुख्य परिणाम हालाँकि इन प्रतिकृतियों से तीन प्रतिकृतियों के बीच और अलग-अलग सामग्रीयों में बोतलों के बीच प्रभावित नहीं है जो कि सभी मापदंडों की पानी की गुणवत्ता में महत्वपूर्ण सुधार को संक्षिप्त करने के लिए प्रयोग किया जाता है, अगर पानी अनिहोत्र बातावरण में रखा जाता है। एक विस्तृत शृंखला के विविध चुम्बकीय तरंगों को ढालने के लिए ताबे, इस्पात या एल्युमिनियम की तरह धातुओं के कंटेनरों को ‘फेराडे केज’ के रूप में अच्छी तरह से काम करना चाहिए, लेकिन अगर आप बहुत अधिक ऊर्जा विकिरण। ये कंटेनरों का इस्तेमाल से अंदर की किरणों को रोकना नहीं जा सकता। आगे के अध्ययन के लिए यह एक ऐसा प्रयोग करने का सुझाव दिया जाता है जिसमें एक कंटेनर का नेतृत्व किया जाता है। दीवार की मोटाई के एक से.मी. पानी पर प्रभाव में कम से कम एक अंतर बनाने के लिए पर्याप्त होना चाहिए। वर्तमान अध्ययन में जल प्रदूषण की समस्या को कम करने में कुछ दिलचस्प टिप्पणियाँ दिखाई गईं। महत्व की ध्यान में रखते हुए आगे व्यवस्थित अनुसंधान अध्ययनों का सुझाव दिया जाता है। प्रयोगात्मक डिजाइन को अलग-अलग दिशाओं में संशोधित किया जाता है। (ऐसे करने में नमूनों जहाँ अनिहोत्र कभी नहीं था। प्रयोग के 3 दिन के लिए प्रदर्शन किया जाएगा। यह जानने में मदद मिलेगी कि क्या ऊर्जा क्षेत्र समय की अवधी में निर्माण कर रहा है या नहीं, कई वर्षों से लगातार अनिहोत्र के साथ एक अनिहोत्र कुटिया में नमूनों को सम्मिलित करने
के लिए संभव है लेकिन प्रयोग के समय में अमिहोत्र को न देखे और देखे कि
ऊर्जा गैर-निष्पादन के कुछ समय बाद भी अमिहोत्र का क्षेत्र मौजूद हो।

नमूनों को केवल एक दिन, दो दिन आदि रखे ताकि पानी की गुणवत्ता
में ये परिवर्तन कितनी तेजी से हो जाए और यह देखने के लिए भी जारी रहे की
क्या यह सुधार जारी है या कुछ बिंदु पर बंद हो जाता है। सबसे दिलचस्प सवाल
यह है- किस प्रकार का ऊर्जा क्षेत्र अमिहोत्र द्वारा बनाया गया है और कैसे इस
प्रकार को ऊर्जा क्षेत्र में पानी की गुणवत्ता में बदलाव लाया जाता है। भविष्य के
अध्ययनों के लिए दो अनुमानों का सुझाव दिया गया है। (1) प्रदूषित पानी में
सूक्ष्मजीव है जो अमिहोत्र क्षेत्र द्वारा सक्रिय है और इस प्रकार का पानी की से
पतियों में सुधार करने में मदद करते है। (2) अमिहोत्र उस क्षेत्र में एक ऊर्जा क्षेत्र
बनाता है जो विद्युत चुम्रीकीय क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है।

पहली अवधारणा के लिए ‘माइक्रोबायोलॉजी’ फील्ड में आगे की
आवश्यकता है जा कि पानी की गुणवत्ता को सुधारने में मदद कर सकता है और
उनके गतिविधि को अमिहोत्र वातावरण को कैसे प्रभावित करता है, दूसरी
अवधारणा, भौतिकवादों के लिए चुनौती है अमिहोत्र के पात्र के पिरामिड
आकार शायद कुछ ज्यादा शोध नहीं करते हैं। लेकिन अभी तक इस क्षेत्र में कुछ
प्रारंभिक अध्ययन नहीं है, एक संभावना प्राण ऊर्जा है फिर ‘प्राण’ की इस
अवधारणा को आधुनिक विज्ञान की भाषा में अनुवाद करना होगा और विशेष
रूप से प्राण ऊर्जा को मापने के तरीकों की आवश्यकता होगी कई दिलचस्प
अध्ययनों की आवश्यकता है और ये एक मदद कर सकते है। आधुनिक विज्ञान
के संदर्भ में ऐसी बुनियादी वैदिक अवधारणाओं को ‘प्राण’ के रूप में समझा
विभिन्न विषयों के सभी वैज्ञानिकों को सेना में शामिल होने के लिए आमंत्रित
किया गया है।

प्रदूषण पर अमिहोत्र का प्रभाव
हम जिस हवा में सांस लेते हैं जो पानी पीते हैं जिस मिट्टी पर हम खेती करते हैं। वह सब जहरीली होती है। प्रदूषण हमारे समय की सबसे बड़ी समस्या है। और यह एक रोजमरी की समस्या है जो हमारे जीवन और भविष्य को प्रभावित करती है।

हम इसे पसंद करते हैं या नहीं हमने पहले ही खुद को मौत के जबड़े में प्रौद्योगिकी की चांदी की थाली में सौंप दिया है। प्रौद्योगिकी सभी पोषक तत्वों की मिट्टी को नष्ट करने, हमारे द्वारा सांस लेने वाली हवा को जहर देने, हमारे द्वारा पीने वाले पानी को प्रदूषित करने जड़ी-बूटियों की तनावकृतियों के साथ तथाकथित पौधों और जानवरों के कीटों को नष्ट करने और रासायनिक खाद्य योजकों की एक बड़ी श्रृंखला के साथ मनुष्यों को जहर देने के लिए जिम्मेदार है।

विनाश का प्रतिकार करने के व्यापक प्रयास के बिना मनुष्य इस युग में जीवित नहीं रह सकता है। हमें वातावरण मिट्टी पानी और सभी जीवों पर प्रदूषित परिस्थितियों के प्रभाव को कम करने के लिए वैज्ञानिक साधनों पर निर्भर रहना चाहिए। प्रकृति पर इस बहुपक्षीय हमले का मुकाबला करने के लिए आधुनिक विज्ञान के पास कोई जवाब नहीं है।

हमारे लिए ज्ञान की सोने की खान में उतरने के अलावा कोई रास्ता नहीं बचा है, जिसे वेद कहा जाता है जो मानव जाति के लिए ज्ञात ज्ञान का सबसे प्राचीन शरीर है। होमा थेरेपी ज्ञान के इस स्रोत से आती है और हमारे वातावरण को शुद्ध करने का उपाय है।

अविनोत होम थेरेपी में मूल आग है। यह अब दुनिया को बचाने का तरीका है। और समाधान ऐसा होना चाहिए कि इसे व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर लागू किया जा सके। व्यक्ति को अपने स्वयं के उपचार और अपने पर्यावरण के उपचार की जिम्मेदारी लेने की शक्ति दी जाती है।
अनिहोत्र अभि के माध्यम से वातावरण को शुद्ध करने की प्रक्रिया है, जिसे सूर्योदय और सूर्यस्त के बायोरिम्न के अनुरूप तांबे के पिरामिड में तैयार किया जाता है।

होमा एक संस्कृत शब्द है जिसका उपयोग यहाँ यज्ञ के पर्यावरणीय रूप में किया गया है। यज्ञ बायोएनजेक्ट वैदिक विज्ञान से तकनीकी शब्द है जो अभि की एजेंसी के माध्यम से वातावरण की विषाक्त स्थितियों को हटाने की प्रक्रिया को दर्शाता है। इसका अर्थ है अभि को माध्यम बनाकर वातावरण का उपचार और शुद्धिकरण।

होमा थेरेपी का अर्थ है होम के माध्यम से वातावरण का उपचार और शुद्धिकरण। होमा थेरेपी में मूल सिद्धांत वातावरण को ठीक करना है और स्वस्थ वातावरण आपको ठीक करेगा। अनिहोत्र होम थेरेपी की मूल उपचार अभि है। अनिहोत्र जैवकी चिकित्सा कृषि और जलवायु इंजीनियरिंग के सबसे प्राचीन वैदिक विज्ञानों से मानवता के लिए एक उपहार है।

होमा थेरेपी का अभ्यास वातावरण से विषाक्त पदार्थों को निकालता है और इसका उपचार पर जबरदस्त प्रभाव पड़ता है। मनुष्य जानवरों और वास्तव में पूरे जीवमंडल पर।

अनिहोत्र कोरोना नियत्रन में वरदान

इस नॉवेल कोरोनावायरस SARS-CoV2 द्वारा लोगों के विश्वव्यापी संक्रमण के कारण होने वाली समस्याएं सभी को प्रभावित करती हैं। बेशक हम सभी को कम से कम इस वायरस के प्रसार को धीमा करने के नियमों का पालन करना चाहिए जैसे सोशल डिस्टेंसिंग बार-बार हाथ धोना आदि। हम और क्या कर सकते हैं पारंपरिक वैदिक अनिहोत्र को वातावरण को शुद्ध करने के लिए कहा जाता है। हाल के शोध से पता चलता है उच्च वायु प्रदूषण वाले क्षेत्रों में
कोविड-19 की गंभीरता और घातकता बढ़ जाती है और ऐसा लगता है कि कोरोनावायरस वायु प्रदूषण के कणों द्वारा टहलती जा रही है।

जैसा कि हम जानते हैं कि अनिहोत्र वातावरण को शुद्ध करता है। तो यह इंगित करता है कि अनिहोत्र भी कोरोनावायरस से निपटने के लिए एक उपयोगी उपकरण हो सकता है। जैसा कि यह वायरस हाल ही में गुन्हा है हमारे पास अभी तक ज्यादा सबूत नहीं हैं और अनिहोत्र के कोरोनावायरस पर प्रभाव पर कोई वैज्ञानिक अध्ययन नहीं है।

अभी भी बहुत सारे प्रारंभिक साक्ष्य हैं जो यह प्रश्नाननीय बनाते हैं कि अनिहोत्र कोरोनावायरस संकट को दूर करने के लिए विभिन्न तरीकों से मदद कर सकता है।

अनिहोत्र तीन अलग-अलग तरीकों से मदद कर सकता है:
1. संक्रमित होने की संभावना को कम करना।
2. पहले से मौजूद स्थितियों को कम करना इस प्रकार कोविड-19 के कम गंभीर पादयक्रम की ओर देने का काम करता है।
3. संक्रमण को दूर करने के लिए शरीर का समर्थन करना।

1) संक्रमित होने की संभावना को कम करना

एक बहुत ही दिलचस्प रिपोर्ट बताती है कि अनिहोत्र कोरोनावायरस से संक्रमित होने की संभावना को कम करने में मदद कर सकता है। इसे मैड्रिड में रहने वाली एक महिला एलिजाबेथ एम ने साझा किया था। मैड्रिड स्पेन में कोविड-19 का मुख्य आकर्षण का केन्द्र है; और स्पेन इटली के अलावा यूरोप में सबसे अधिक प्रभावित देश है। अकेले मैड्रिड में ही कोविड-19 से लगभग 4000 मौतें हुई हैं।
एलिजाबेथ एमण् अपने साथी के साथ एक घर में रहती है और उन्होंने एक कमरे को किसी ऐसे व्यक्ति को सबलीज़ पर दिया है जो मैड्रिड में बहुत बार-बार रेस्तरां चलाता है। इसलिए यह शक्स; लॉकडाउन से पहले कई लोगों के संपर्क में था। उनका कोरोनावायरस के लिए परीक्षण सकारात्मक हुआ इसलिए एलिजाबेथ एम और उनके साथी चिंतित हो गए और उनका भी परीक्षण किया गया। उनके दोनों परीक्षण के परिणाम नकारात्मक हो गए। हालांकि उन्होंने एक ही रसोई कमरे में साझा किया, एक साथ भोजन किया एक ही बाथरूम साझा किया और यहां तक कि कुछ दिन पहले जनमदिन की पार्टी भी की थी।

परीक्षण करने वाले डॉक्टर भूत हैरान थे क्योंकि कोरोनावायरस अत्यधिक संक्रामक है और यदि आप एक संक्रमित व्यक्ति के साथ मिलकर रहते हैं तो इस बात की पूरी संभावना है कि आप भी संक्रमित हो जाएं।

प्रभावित। हालांकि एलिजाबेथ एमन्स ने नियमित रूप से अभिहोत्र किया और प्रतिदिन अभिहोत्र राख भी ली। ऐसा लगता है कि इससे संक्रमित होने से बचने में मदद मिली है!

यह कैसे हो सकता है आइए देखें कि कोई व्यक्ति कोरोना वायरस से कैसे संक्रमित होता है। ऐसा लगता है कि तीन मुख्य मार्ग हैं:

क) छूने वाली सतहें (जैसे दरवाजे के हैंडल आदि) वायरस ऐसी सतहों पर कुछ घंटों (धातु पर दस घंटे या उससे अधिक कपड़े पर लगभग छह घंटे) तक रहता है।
ख) खांसने या छोकने वाले संक्रमित लोगों द्वारा बनाई गई हवा में धज्जन की बूंदें (ये बूंदें केवल कुछ मिनटों के लिए हवा में रहती हैं। सामान्य रूप से दूसरी बनाए रखने से मदद मिलती है।)
ग) छोटी बूंदें जो कई घंटों तक हवा में रहती हैं।
जापानी एसोसिएशन फॉर इंफेक्शियस डिजीज के अध्यक्ष और प्रोफेसर माइक्रोबायोलॉजी एंड इंफेक्शियस डिजीज टोहो यूनिवर्सिटी टोक्यो जापान के अध्यक्ष काजुहिरो टेटडा के अनुसार संचरण के तीसरे तरीके पर विचार किया जाना है।

उनकी टीम ने उच्च गति वाले कमरों से माइक्रोमीटर कणों का अवलोकन किया और यह दिखा सके कि ये कण तब भी फैलते हैं जब लोग बातचीत कर रहे होते हैं या बस एक दूसरे के करीब होते हैं। इस प्रकार किसी के खांसने या छींकने पर भी कोरोनावायरस का संक्रमण हो सकता है।


हम अभी तक नहीं जानते हैं कि क्या अनिहोत्र करने से उस कमरे में सतह पर वायरस की संख्या कम हो जाएगी। कुछ शोध का सुझाव दिया जाएगा।

1. विभिन्न शोध संस्थाओं और विश्वविद्यालयों में किए गए कई प्रयोग दर्शाते हैं कि सिर्फ एक कमरे में अनिहोत्र करने से हवा में हानिकारक बैक्टीरिया की संख्या बहुत कम हो जाती है। हवा में जीवाणु भार में कमी के प्रमाण इस प्रकार हैं:
   
   हाल ही में निम्नलिखित प्रयोग पुणे के फर्मूसन कॉलेज में किया गया। मध्यम प्लेटें अनिहोत्र से पहले और बाद में एक कमरे में खुली थीं और 24 घंटे के लिए जीवाणु कॉलोनी विकसित करने के लिए इनक्लूॅड किया गया था।

निष्कर्ष: प्राप्त परिणामों के अनुसार अनिहोत्र के धुएं हवा में माइक्रोबियल लोड को कम करते हैं।
चित्र 5: हवा में जीवाणु भार

बैक्टीरिया पर अभिन्नता राख के प्रभाव को देखने के लिए और प्रयोग किए गए। यह दिखाया जा सकता है कि अभिन्नता राख जोड़ने से जीवाणुओं का विषाणु कम हो जाता है:

क्लेबसिएल्डा न्यूमोनिया के साथ कैप्स्ल निर्माण की हानि

स्ट्रीप्टीकस ऑरियस और क्लेबसिएल्डा न्यूमोनिया के साथ हेमोलिटिक गतिविधि का नुकसान हुआ।
क्लेबसिएला निमोनिया स्टेफिलोकोकस ऑरियस और के साथ फागोसाइटोसस के प्रतिरोध में कमी पायी गयी।

स्यूडोमोनास एरुगिनोसा

इन परिणामों से पता चलता है कि परीक्षण किए गए रोगजनक बैक्टीरिया अधिहोत्र राख के संपर्क में आने पर कम पौश दिखाते हैं। विवरण के लिए देखें पाठाडे अभंग 2014 और अभंग एट अल। 2015।

इन परिणामों की पुष्टि पालमपुर कृषि विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश भारत में किए गए एक अन्य अध्ययन से हुई (कुमारी/पुनम 2015।) इस अध्ययन में अधिहोत्र के प्रभाव और एक सामान्य अभि (जिसमें समान पदार्थ जले थे, एक तांबे के पिलामिड में भी लेकिन अधिहोत्र मंचों के बिना) के बीच तुलना की गई थी। अधिहोत्र ने नियंत्रण अभि की तुलना में जीवाणुओं की संख्या को काफी कम कर दिया।

इस प्रयोग की प्रतिकृति के लिए अधिहोत्र और नियंत्रण कक्ष के बीच कुछ दूरी रखने का सुझाव दिया गया है। इस प्रयोग में दो कमरे एक दूसरे के बगल में थे - और अधिहोत्र बगल के कमरों में भी बैक्टीरिया के विकास को कम कर सकता है।
सबसे अधिक संभावना यह है कि अनिभोत्र का धुआं वातावरण में एरोसोल को आकिष्ठित करता है और फिर जमीन पर गिर जाता है:

पेट फ्लिंगन (एक अमेरिकी वैज्ञानिक Pet Flngan) ने अनिभोत्र के धुएं के प्रदूषणकारी प्रभाव के लिए एक भौतिक स्पष्टकरण का सुझाव दिया जो इंगित करते हैं कि वी और गाय की खाद के कोलाइडल अणु हवा में प्रदूषकों को आकिष्ठित कर सकते हैं और हवा में प्रदूषकों को आकिष्ठित कर सकते हैं जिस तरह से एक पानी को प्रवाहित करने भूमिका निभाया जाता है। “उन्होंने कहा कि जब कुछ एक अणु जमीन पर बसता है, तो वे खाद और दूध के संपर्क में आते हैं और उन्हें वे वर्किन्स और काफी आश्चर्यजनक सामान्य आग सभी नकारात्मक आयन संदर्भ को कम करती है। हो सकता है कि नकारात्मक आयन का यह बढ़ा हुआ स्टर बैक्टीरिया और वायरस को बे-आसर करने में भी मदद कर सकता है, यह एक बहुत ही रोचक और महत्वपूर्ण अध्ययन हो सकता है।

हम इन विद्युतों को यह कहकर सारांशित कर सकते हैं कि अनिभोत्र संभवतः आपको कोरोना वायरस से संक्रमित होने से कुछ सुरक्षा प्रदान करता है इस पैराग्राफ की शुरुआत में उल्लिखित रिपोर्ट की पुष्टि करता है।

2) अनिभोत्र संक्रमित होने वाले लोगों की कैसे मदद करेगा?

ज्यादातर लोग जिन्हें कोविड-19 मिलता है उनमें केवल हल्के लक्षण होते हैं, कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या नहीं होती है। लेकिन रोग कुछ जोखिम असमूहों
में अधिक गंभीर है, जैसे उन लोगों के साथ जिनके पास निम्नलिखित पूर्व मौजूदा स्थितियां हैं:

ह्दय रोग, उच्च रक्तचाप, अस्थमा जैसी पुरानी सांस की बीमारी, मधुमेह, कैंसर, कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली

उन्नत उम्र को अक्सर जोखिम कारकों में से एक के रूप में वर्णित किया जाता है। हालांकि, ऐसा लगता है कि उम्र मुख्य रूप से एक भूमिका निभाती है, क्योंकि आम तौर पर बढ़ती उम्र के साथ प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर हो जाती है।

कोविड-19 से मरने वाले अधिकांश लोग इनमें से एक या अधिक पहले से मौजूद स्थितियों से पीड़ित थे। अभिन्नत्र इन पूर्व-मौजूदा स्थितियों को कम करने में मदद कर सकता है।

ह्दय रोग और उच्च रक्तचाप

अभिन्नत्र रक्तचाप को सामान्य करने में मदद करता है। अभिन्नत्र से पहले और बाद में रक्तचाप की जाँच करते हुए एक सरल प्रयोग किया गया। परिणाम यह हुआ कि अभिन्नत्र का अनुभव करके रक्तचाप सामान्य स्तर पर लीट आया।

Parishistha – Aghihotra.
अभिन्नलक्ष की प्रकृति

ठीक अभिन्नत्र के समय तांबे के पत्र के आसपास विशाल मात्रा में ऊर्जा इकट्ठा होती है तथा पत्र के पास चुंबकीय क्षेत्र का निर्माण होता है। जो कि नकारात्मक ऊर्जा को निष्क्रिय करता है। तथा सकारात्मक ऊर्जा को प्रबल बनाता है।

अभिन्नत्र धुंआ वातावरण में उपस्थित हानिकारक रेडिएशन के कणों को इकट्ठा करके सुक्षम स्तर पर इनके रेडियोधर्मी प्रभाव को निष्क्रिय करता है।

वहां सिर्फ अभि की ऊर्जा है ऐसा नहीं, वहां लय और मंत्र से भी अति सूक्ष्म ऊर्जा का निर्माण होता है। यह ऊर्जा अभिन्नरा उत्पन होती है और वातावरण में प्रक्षेपित की जाती है। हवन सामग्री की गुणवत्ता भी ध्यान में ले। जिस में यह चैतन्य प्रदायी होम का पूरा परिणाम छिपा है।

अभिन्नत्र के प्रभाव

सूर्य ऊर्जा लाता है और लेता है। इससे प्रदूषण समाप्त करने के लिए जो आवश्यक पोषक तत्व है उनका निर्माण अपने आप हो जाता है। यह दुनिया को शांति प्रदान करता है। अगर अभिन्नत्र पिरामिड जनरेटर है तो उसकी अभि टरबाइन का कार्य करती है। गो वंश का कंडा गाय का या और चावल (अक्षत) इनके प्रभाव से एक संयोजन बनता है जो वस्तुमात्र पर धड़कता है। उसे घेरता है, उसकी घातक ऊर्जा को निष्क्रिय करता है। और पोषण प्रदान करता है यह जीने के लिए उत्पन ना होने के लिए विस्तार के लिए पोषक द्रव्य प्रदान करता है इस तरह से अभिन्नत्र प्रक्रिया वातावरण निरामय करता है।
अग्निहोत्र की सामग्री

पिरामिड

अग्निहोत्र करने के लिए पिरामिड आकार के विशिष्ट तांबे के पात्र की आवश्यकता होती है। ताम्र धातु सुचालक है। सुबह के अग्निहोत्र के समय सभी प्रकार की बिद्युत ईथर और सुरक्षा ऊर्जा पिरामिड आकार के पात्र की ओर आकर्षित होती है। और सूर्यस्त के समय पात्र से पुनः वेग से बाहर निकलती है।

चावल (अक्षत)

अग्निहोत्र पॉलिश किए हुए चावलों में पोषक तत्वों की कमी हो जाती है इसलिए (कम या) बिना पॉलिश वाले चावल का उपयोग करना चाहिए! और अखंडत-साबूत चावल का उपयोग अग्निहोत्र के लिए करें। अगर चावल टूटा हो तो उसकी संरचना बिगड़ती है। इसलिए चैतन्य प्रदाय अग्निहोत्र के लिए वह अपात्र है।

घी

घय के घय में विशेष औषधीय गुण होते हैं। जब इस घी का उपयोग अग्निहोत्र प्रक्रिया में किया जाता है। तब वह सूक्ष्म ऊर्जा के वाहक के रूप में कार्य करता है। घाय के घय में शक्तिशाली ऊर्जा छिपी रहती है।

गोवंश का कंदा

सूखे हुए कंदो से अग्निहोत्र की अभ्यास करें। उत्तर व दक्षिण अमेरिका के मूल निवासी, स्कैंडिनेवियन देश, पूर्व और पश्चिम यूरोप, अफ्रीका और एशिया
यहां की सारी प्राचीन संस्कृतियों में गोवंश के गोबर को औषधि पदार्थ मानते आ रहे हैं।

समय सारणी
अग्निहोत्र यह वेदों में दी गई सूर्यदय और सूर्यास्त की परिभाषा अनुसार दिए हुए समय किया जाना चाहिए। तांत्रिकी विकास की वजह से आज हम अक्षांश, रेखांश और समय क्षेत्र निकाल कर इंतिहाद स्थान का सेंकेंड तक समय वेबसाइट से निकाल सकते हैं। आप स्मार्टफोन से 'अग्निहोत्र बद्दी' (Agnihotra buddy) ऐप का इस्तेमाल कर सकते हैं।

अग्निहोत्र के लिए अग्नि कैसे तैयार करें?

गोवंश के कंडे का टुकड़ा पिरामिड की पेंडी में रखें।
फिरामिड में कंडे के टुकड़े इस तरह रखें जिससे हवा का संचार अच्छी तरह से हो सके।
कंडे के एक छोटे टुकड़े पर घी लगाकर अग्नि प्रज्वलित करें। अग्नि भस्म में अधिक औषधीय गुण धर्म लाने के लिए अग्नि प्रज्वलित करने के लिए गाय के घी के अलावा अन्य किसी पदार्थ का उपयोग ना करें।

प्रज्वलित किया हुआ कंडे का टुकड़ा पात्र में रखें।
थोड़ी ही देर में सभी कंडे प्रचलित होंगे। सूर्योदय और सूर्यस्त के समय पात्र में अग्नि ठीक से प्रचलित होना चाहिए।
अग्नि अच्छी तरह से प्रज्वलित होने के लिए आप हाथ पंखे का उपयोग कर सकते हैं। अग्नि प्रज्वलित करने के लिए मुंह से फूंक ना लगाएं नहीं तो मुंह से कीटाणु अग्नि में जा सकते हैं।
अगनिहोत्र प्रक्रिया

थोड़े से अक्षत चावल के दाने थाली में या बाएं हथेली में ले।

उसमें घी की कुछ बूंदें डालें।
ठीक सूर्योदय के समय पहला मंत्र कहें और “स्वाहा” शब्द के बाद दाहिने हाथ से थोड़े से चावल (चुटकी भर) का पहला हिस्सा अग्नि में डालें।

दूसरा मंत्र कहें और “स्वाहा” शब्द के बाद दाहिने हाथ से चावल का दूसरा हिस्सा अग्नि में डालें। सूर्यस्त को सूर्यस्त के मंत्र के साथ समान कृति करें।

ठीक समय पर अग्निहोत्र नहीं हो सका तो वह अग्निहोत्र नहीं है। और भस्म में और वातावरण पर प्रभाव करने वाली चैतन्य प्रदायी उर्जा भी नहीं मिलेगी।

हर अग्निहोत्र के बाद जितना हो अधिक समय ध्यान में बिताए कम से कम अग्नि शांत होने तक बैठें। अगले अग्निहोत्र के पहले ताम्र पत्र से भस्म निकालकर कांच या मिट्टी के बर्तन में इकट्ठा करें।
अग्निहोत्र मंत्र

सभी जगह स्पंदन का अस्तित्व है। अगर आप गहराई से अध्ययन करें तो सब कुछ स्पंदन ही है। जहां-जहां स्पंदन है वहां - वहां ध्वनि है। जब हम मंत्र का उच्चारण करते हैं, वह ध्वनि उस विशिष्ट स्पंदनों को सक्रिय करता है। जो परिणाम स्वरूप विशिष्ट वातावरण और प्रभाव निर्माण करता है। इस तरीके से अपेक्षित परिमाण प्राप्त होता है। मंत्रों द्वारा हम कुछ भी प्रवृत्त, निरंत्रित और परिवर्तित कर सकते हैं।
अग्निहोत्र मंत्र

सूर्योदय के समय
सूर्याय स्वाहा।
(चावल और घी मिश्रित प्रथम भाग स्वाहा उच्चारण के बाद अग्नि में डालें।)
सूर्याय इद्धम् न मम। प्रजापतये स्वाहा।
(चावल और घी मिश्रित द्वितीय भाग स्वाहा उच्चारण के बाद अग्नि में डालें।)
प्रजापतये इद्धम् न मम।
इसी प्रकार सूर्योदय के समय का अग्निहोत्र संपन्न हुआ।

सूर्यास्त के समय
अग्नये स्वाहा।
(चावल और घी मिश्रित प्रथम भाग स्वाहा उच्चारण के बाद अग्नि में डालें।)
अग्नये इद्धम् न मम। प्रजापतये स्वाहा।
(चावल और घी मिश्रित द्वितीय भाग स्वाहा उच्चारण के बाद अग्नि में डालें।)
प्रजापतये इद्धम् न मम।
इसी प्रकार सूर्यास्त के समय का अग्निहोत्र संपन्न हुआ।